वैदिक युग के महिलाओं की धार्मिक एवं शैक्षणिक स्थिति

डॉ. मनीष कुमार सिंह*

प्राचीन काल में भारतीय महिला सर्वशक्ति संपन्न मानी गई थी। स्त्री–शिक्षा की दृष्टि से वैदिक काल को स्वर्ण युग माना जाता है। वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा का पूर्ण अधिकार था तथा समाज में उनका विशिष्ट स्थान था। कृषिकार्य, धनुर्वेद एवं अश्व संचालन के साथ–साथ मंत्रों का उच्चारण करने तथा वेदों का अध्ययन करने की पूरी स्वतंत्रता थी। महिलाओं में विद्या, यश, महत्त्व धीरे–धीरे इतना अधिक बढ़ा कि उसके बिना अकेला पुरुष अपूर्ण और अधूरा समझा जाता रहा। स्त्री–पुरुष की शरीरार्द्ध तथा अर्द्धांगिनी मानी गई है। पत्नी ही गृह है वही गृहस्थी तथा उसमें आनंद समाहित है। वैदिक काल में शिक्षा के क्षेत्र में कन्या को पुरुषों के समक्ष रखा गया था। कन्या को शिक्षा प्राप्ति के लिए विशेष अनुष्ठान का आयोजन किया जाता था। शिक्षा ग्रहण करने के दौरान वह ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती थी। वैदिक युग में वही स्त्री – पुरुष विवाह के योग्य समझे जाते थे जो शिक्षित होते थे। वैदिक युग में ऐसी भी स्त्रियों का संकेत मिलता है, जो जीवन पर्यन्त विद्याध्ययन में लगी रहती थी और वह ''ब्रह्मवादिनी'' कही जाती थी।

उत्तर वैदिक काल के पूर्वार्द्ध में स्त्री–शिक्षा की स्थिति ठीक एवं संतोषजनक थी। इस काल में स्त्रियाँ वेदों का अध्ययन कर सकती थी। समाज में उनका प्रतिष्ठित स्थान था। पर उत्तर वैदिक काल के उत्तरार्द्ध में स्त्रियों की स्थिति में पतन आरंभ हो गया। उनकी शिक्षा–दीक्षा प्रतिबंधित होती गई तथा उनके अधिकारों पर काफी नियंत्रण लगा दिए गए। इस प्रकार उत्तर वैदिक काल में स्त्री–शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती है।

वैदिकोत्तर काल में ही वैदिक यज्ञों का स्वरूप कर्मकांड प्रधान हो गया, और वैदिक ज्ञान पर ब्राह्मणों का एकाधिपत्य स्थापित होने लगा। साथ ही साथ महिलाओं को यज्ञीक कार्यों से अलग रखने का प्रयास किया जाने लगा। वैदिकोत्तर काल में उन पर अनेक प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए। उन्हें जीवन पर्यन्त पुरुषों के नियंत्रण में रखने का निर्देश स्मृतिकारों द्वारा दिया गया। कालांतर में धर्म और समाज की रक्षा के नाम पर अनेक ऐसी व्यवस्थाओं का नियमन हुआ,

***अतिथि सहायक प्राध्यापक स्नातकोत्तर इतिहास विभाग पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णिय**

जिसमें स्त्रियों की धार्मिक एवं शैक्षणिक दशा निरन्तर दयनीय होती गई। पाणिनि ने भी महिला शिक्षणशाला का उल्लेख किया है, उनके अनुसार सह–शिक्षा का भी प्रचलन था। वाल्मीकि आश्रम में अत्रेयी ने लव और कुश के साथ शिक्षा ग्रहण की थी। पौराणिक साक्ष्य से महिलाओं की नृत्य, गायन, चित्रकला आदी के प्रति झुकाव की जानकारी मिलती है। स्मृतिकारों के अनुसार बालिकाओं के उपनयन में वैदिक मंत्र नहीं पढ़ना चाहिए। कालांतर में स्त्रियाँ शूद्रों की तरह वैदिक मंत्रों के उच्चारण और यज्ञों में सम्मिलित होने के अधिकार से भी वंचित कर दी गयी। वैसे आम स्त्रियों से भिन्न अभिजात वर्ग की स्त्रियों की अवस्था थी।

वैदिक काल में स्त्रियाँ किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं थी। छात्राओं के दो वर्गों की जानकारी मिलती है। एक श्सदयोवधूश् और दूसरा श्श्ब्रह्मवादिनीश्श कहीं जाती थी। सदयोवधू वैसे छात्राओं को कहा जाता था जो विवाह के पूर्व तक यज्ञीक क्रियाओं के हेतु वैदिक मंत्र को सीख लेती थी। ब्रह्मवादिनी उन्हें कहा जाता था जो विद्याध्ययन पूर्ण कर विवाह करती थी। परंतु कुछ ऐसी भी स्त्रीयाँ होती थी जो जीवन– प्रर्यंत विद्या अध्ययन में संलग्न रहती थी। इस युग की कन्या के लिए भी उपनयन का विधान था और वे बालकों की तरह ब्रह्मचर्य का अनुगमन करती थी। ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ बहुमुखी प्रतिभा संपन्न होती थी।

महिलाएं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलती थी। वे केवल अपने पति के गृह की सामग्री ही नहीं थी, बल्कि वे पति के साथ मिलकर गृह के यज्ञीक कार्य भी संपन्न करती थी। पति–पत्नी की तुलना रथ में जुड़े दो बैलों से की गई है। पत्नी अर्थात गृह स्वामिनी के बिना गृह की कल्पना व्यर्थ मानी गई। उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों का परंपरागत आदर और सम्मान समाज में बना रहा तथा उसके प्रति समाज की धारणा पूर्ववत बनी रही। शिक्षा के क्षेत्र में भी वे पुरुषों के समकक्ष बनी रही। इस युग में वे ही विवाह योग्य माने जाते थे जो शिक्षित होते थे। परंतु वैदिक यज्ञों में कर्मकाण्डों का महत्व बढ़ने लगा तथा वे जटिल से जटिलतर होते गए। यज्ञों की शुद्धता एवं पवित्रता के नाम पर आडंबर बढ़ने लगा। इससे स्त्रियों की धार्मिक स्थिति में बदलाव आने लगा। बदलते सामाजिक परिवेश, जो अनार्यों के साथ संपर्क से उत्पन्न हुआ था, स्त्रियों के अधिकारों एवं स्वतंत्रता को सीमित किया जाने लगा। इसका कारण यह लगता है कि इस समय अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन हो चुका था, जिसमें दूसरे वर्ग की ऐसी स्त्रियाँ भी होती थी और वैदिक मंत्रों का गलत उच्चारण करती थी। अतः वैदिक साहित्य को सही और शुद्ध बनाए रखने के लिए स्त्रियों को अलग रखने का नियम बना। कालांतर में स्त्रियों की दशा और भी दयनीय हो गई।

विभिन्न धर्मों में महिलाओं की पूजा का विधि निर्दिष्ट है। शक्ति के रूप

में मातृदेवी की आराधना भारतीय परंपरा में अति प्राचीन है। ऋग्वेद के कुछ सूक्तों में भी उषा तथा वाग्देवी की स्तुति की गई है किंतु शक्ति की आराधना का अधिक स्पष्ट रूप से संकेत सर्वप्रथम ब्राह्मण–ग्रंथों आरण्यकों और उपनिषदों में दृष्टिगत होता है। रुद्र की बहन के रूप में अम्बिका का उल्लेख हमें शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। पार्वती को तैत्तिरीय अरण्यक में रुद्र की पत्नी का रूप दर्शाया गया है। इसमें उसे विद्या की देवी कहां गया है। महाभारत के भीष्म पर्व में दुर्गा, काली, महाकाली, कात्यायनी, उमा, कपाली, कुमारी, कौशिकी, चंडी इत्यादि नामों से स्मरण किया जाता है। मार्कंडेय पुराण में दुर्गा को महिषासुर मर्दिनी देवी के रूप में वर्णित किया गया है। देवी की उपासना का सबसे पुराने केंद्र गांधार तथा कश्मीर थे। देवी लक्ष्मी का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में आया है।

वैदिक संस्ति में नर और नारी लगभग एक–सा स्थान रखते थे न कोई श्रेष्ठ था न अधम। दोनों के कार्यक्षेत्र भी अभी स्पष्ट बंटे हुए न थे। महिलाओं के कर्तव्य व अधिकार पुरुषों के समकक्ष ही थे। शिक्षा, युद्ध, परिवार, समाज सभी स्थलों पर नारी–पुरुष के समान ही भाग लेती थी और हर कार्य की अधिकारिणी थी। घोष, अपाला, लोपामुद्रा जैसी विदुषी तथा ऋषि नारियों का उल्लेख भी हमें वेदों में मिलते हैं। संबंधों के दायरे तथा उसके अतिरिक्त अपने स्वतंत्र रूप में भी नारी समक्ष आई है। हालांकि पुत्र के प्रति मोह तथा नारी का गृहिणी वहां भी स्पष्ट दिखाई देता है, ष्उत्तम गृहिणी के समान विशेष रीति से सबका पालन करने वाली प्र.ति के तत्वों में प्रातः काल का समय उर्जा प्रदान करने वाला होता है।ष ऋषि ने उषा की उपमा गृहिणी से दी है। वेदों में अधिकतर उषा व रात्रि का वर्णन है। स्त्री और पुरुष समाज रूपी रथ के दो पहिए हैं। दोनों के सम्यक एवं संतुलित विकास पर ही समाज का विकास निर्भर करता है। भारत में स्त्री शिक्षा की स्थिति परिवर्तनशील रही है। वैदिक काल से लेकर आज तक उनकी स्थिति में परिवर्तन होता रहा है। स्त्री–शिक्षा की दशा और दिशा को सम्यक रूप से समझने के लिए विभिन्न कालों का संक्षिप्त अवलोकन आवश्यक है।

संदर्भ सूची :

1. मनुस्मृति
2. वृहदारण्यक उपनिषद
3. अथर्ववेद
4. जयशंकर मिश्र, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना 1974
5. हर्ष चरित

6. द गार्डेन ऑफ एडन जेन्सीस रू अमेरिकन बाइविल सोसायटी, न्यूयार्क
7. पांडुरंग वामन काणे, धर्म शास्त्र का इतिहास, (आनु.–अर्जुन चौबे), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ तृतीय संस्करण, 1996
8. ए. एस. अल्तेकर, द पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, तृतीय संस्करण, दिल्ली, 1974, पृ.–54–55
9. शिवस्वरूप सहाय, प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन, नई दिल्ली 2001